Dr Tapali Mukherjee
Associate Professor
Music Dept.
R. M. college saharsa.

Date – 23 – 05 – 2020

Paper 5th

Study material for B.A Part III (Hon) Theory.

Topic – Rag – Ragini classification.
(राग – रागिनी वर्गीकरण)।

राग – रागिनी वर्गीकरण मध्यकालीन संगीत में उत्पत्ति हुई है। 13 वी शताब्दी अर्थात शारंगदेव के पहले ही रागों का पारिवारिक वर्गीकरण का वर्णन पाया जाता है।

संगीतज्ञों डा. सुभद्रा चौधरी के अनुसार, "रागों का पारिवारिक वर्गीकरण का सुत्रपात नारदजी के ग्रन्थ "संगीत मकरन्द से हुई है। अतः 12 वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे श्री भुवनदेवाचार्य द्वारा लिखित "अपराजितपृच्छा" नामक ग्रन्थ मे 6 रागों एंव प्रत्येक के छ-छ भार्याओ का वर्णन पाया जाता है।

राग तथा रागिनी यह दोनों शब्दो पुरुष तथा स्त्रीवाचक है, क्योंकि गम्भीरता, विशालता और पुरुषत्व भाव को प्रतीक पुरुष को समझा जाता है। भाव का चंचलता, कोमलता और मृदुता जैसी भाव का प्रतीक स्त्री है। मध्यकाल मे राग रागिनी वर्गीकरण ज्यादा मात्रा मे प्रचलन था। उस समय कठोर या बड़े स्वरों के रागों को पुरुष वर्ग मे जैसे- भोलकौस मारवा भैरव आदि। और इनके मिलते हुए कोमल और मृदुल स्वर वाले रागों को रागिनियों मे स्थान दिया। जैसे भैरवी, गुजरी तोड़ी आदि। राग-रागिनी का यह वर्गीकरण भारतीय संगीत का मौलिक देन था। राग-रागिनी वर्गीकरण के सम्बन्ध मे विद्वानो मे बहुमत है। जिनमे चार मत ~~अधि~~ अधिक प्रसिद्ध है—

(1) शिवमत अथवा सोमेश्वर मत – जिसके अनुसार 6 राग और उनकी 36 रागिनीया थी।

मुख्य 6 राग क्रमशः इस प्रकार हैं (1) श्री राग, (2) वसन्त राग (3) भैरव (4) पंचम राग (5) मेघ राग (6) वृहन्नाट राग, इन 6 रागों की 36 रागिनीयाँ थी।

(ii) कृष्णमत या कल्लिनाथ मत – इनके भी 6 राग तथा उनकी 36 रागिनीयाँ थी – जो निम्न हैं – (1) नटनारायण राग, (2) भैरव राग, (3) मेघ राग (4) पंचम राग (5) वसन्त राग (6) श्री राग – इनके भी 6 राग और 36 रागिनीयों की मान्यता थी।

(iii) भरतमत – इस मत के अनुसार 6 राग थी लेकिन 30 रागिनीयाँ थी – 6 प्रमुख राग निम्न हैं (1) मेघराग (2) श्री राग (3) हिंडोल, (4) भैरव, (5) दीपक (6) मालकोष आदि।

(iv) हनुमत मत के अनुसार भी 6 राग और 30 रागिनीयाँ थी। (1) भैरव राग (2) मेघ राग (3) श्री राग (4) कौशिक (5) दीपक (6) हिंडोल

इन चारों मतानुसार राग तो छ (6) माना गये लेकिन शिव तथा कृष्ण मत मे 6 राग तथा 36 रागिनीयाँ मानी गई।

भरत मत और हनुमान मत के अनुसार 6 राग तथा 30 रागिनीयाँ को माना गया है।

— —

Scanned with CamScanner